No. of Printed Pages : 7

एम.टी.टी.-002

00439

POST GRADUATE CERTIFICATE IN BENGALA - HINDI TRANSLATION PROGRAMME (PGCBHT)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2012

एम.टी.टी.-002 : बांग्ला-हिन्दी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन

समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

***नोट : सभी** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

1. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किसी एक*** का उत्तर लगभग *500* शब्दों में दीजिए : 20

   (a) बांग्ला और हिन्दी की सांस्कृतिक समानताओं पर प्रकाश डालिए।

   (b) बांग्ला और हिन्दी में होनेवाले विशिष्ट प्रयोगों पर चर्चा कीजिए।

2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों का हिन्दी पर्याय लिखिए : 5

দুজনই	ঊননব্বই
পৈতে	চাঁচর
ইনি	খানেক
কেমন	দুল
জবা	রান্নাঘর

3. নিম্নলিখিত হিন্দী শব্দों का बांग्ला पर्याय लिखिए : 5
बानवे, गँवार, हथियाना, लठैत, मिठास, बातूनी, क्योंकि, महँगा, बिल्कुल, दोबारा।

4. নিম্নলিখিত কহাবতों-मुहावरों में से **किन्हीं पाँच** का हिन्दी- 10
अनुवाद कीजिए। और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।
আকাশ পাতাল, এক হাতে তালি বাজেনা, ইচ্ছে থাকলে উপায় হয়, গা ঢাকা দেওয়া, ছোট মুখে বড় কথা, কোমর বেঁধে, যেমন কর্ম তেমন ফল, মাটি হওয়া, ডুমুরের ফুল খৈ ফোটা।

5. নিম্নলিখিত में से **किन्हीं तीन** का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : **3x15=45**

(a) বহুদিন ধরে বহু ক্রোশ দূরে
বহু ব্যয় করি বহু দেশ ঘুরে
দেখিতে গিয়েছি পর্বতমালা,
দেখিতে গিয়েছি সিন্ধু।
দেখা হয় নাই চক্ষু মেলিয়া
ঘর হতে শুধু দুই পা ফেলিয়া
একটি ধানের শিষের উপরে
একটি শিশির বিন্দু।

(b) রোদভরা উঠানে শান্ত সকালে নরম শরীর বলের মতো গুটিয়ে বসে আছে সাদা কালো কয়েকটা বেড়াল। টিপকলের ধারে বসে বাসন মাজঝিল ঝি সুধা। তাকে ঘিরে ওপর নীচে 'খা খা' করে ডাকছে কাক। বড় পাজি কাক এখানে, লাফিয়ে এসে

খোঁপায় ঠোক্কর দেয় সুধার। আশ থেকে পাশ থেকে এঁটো কাঁটা নির্ভয়ে খেয়ে যায়, কখনো বা সাবানের টুকরো, চামচ, ঠাকুরের ক্ষুদে প্রসাদের থালা গেলাস মুখে করে নিয়ে যায়। এ বাড়ি ও বাড়ি ফেলে দিয়ে আসে। বাসন মাজতে এসে সুধার বড় জ্বালাতন। বসে বসে সে কাকের গুষ্টি উদ্ধার করছিল - কেলেভূত, নোংরাখেকো, মর মর। ভগবানের ছিষ্টি বটে, যেমন ছিরি, তেমনি স্বভাব।

(c) বৃদ্ধ ক্ষনেক চিন্তা করে বললেন, মহারাজ আপনি নিজে এ রাজ্যের সাধারন প্রজা ছিলেন। আপনার পিতা ছিলেন আমার প্রতিবেশী। এ রাজ্যের অরাজক আপনি রাজদন্ডের ভয় না রেখে দুর্বল ভীরু পীড়িত জনসাধারনকে জোট বদ্ধ করে বিপুল এক মনুষ্যশক্তির জন্ম দিয়েছিলেন। শক্তিমাত্রই নিরপেক্ষ শুভ বা অশুভ যে কোন কাজেই তাকে লাগানো যায়। আপনি সেই শক্তিকে ময়লাভিমুখী করেছিলেন। ফলে আমরা এক অদ্ভুত রাষ্ট্রের জন্ম হতে দেখেছি। এ রাজ্যে যখন প্রথম খাদ্য ও শস্য বিনামূল্য হয়ে গেল তখন এটাকে সত্য বলে মনে হয়নি। সেদিন আমি নগরের বিভিন্ন আহার গৃহে গিয়ে আহার করেছি। যদৃচ্ছা যা প্রাণে চায় তাই খেয়েছি এবং বেরোনোর সময়ে কেউ দাম চাইছে না দেখে ভীষণ অস্বস্তি বোধ করেছি, নিজেকে চোরের মতন মনে হয়েছে। আমার মত বহু মানুষই সেদিন ঐ রকম করেছে, তারা দেখেছে সত্যিই সব বিনামূল্যে, তবু

তাদের বিশ্বাস হচ্ছিল না। এই বিনামূল্যে খাদ্য পাওয়ার ব্যাপারটা বেশী দিন স্থায়ী হবে না ভেবে কয়েকদিন আমি খুব খেয়েছিলাম।

(d) জঙ্গলে যাবার কথা শুনে ফেলুদার মন যে নেচে উঠবে, আর সেই সঙ্গে আমারও তাতে আশ্চর্যের কিছু নেই, কারণ আমাদের বংশেও শিকারের একটা ইতিহাস আছে। বাবার কাছে শুনেছি বড় জ্যাঠামশাই নাকি রীতিমতো ভাল শিকারী ছিলেন। আমাদের দেশ ছিল ঢাকার বিক্রমপুর পরগনার বোনাদীঘি গ্রামে। বড় জ্যাঠামশাই ময়মনসিংহের একটা জমিদারি এস্টেটের ম্যানেজার ছিলেন। ময়মনসিংহের উত্তরে মধুপুরের জঙ্গলে উনি বাঘ হরিন বুনো শুয়োর মেরেছেন। আমার মেজ জ্যাঠা-মানে ফেলুদার বাবা - ঢাকা কলেজিয়েট স্কুলে অঙ্ক আর সংস্কৃতের মাস্টার ছিলেন। মাস্টার হলে কী হবে- মুগুর ভাঁজা শরীর ছিল তার। ফুটবল ক্রিকেট সাঁতার কুস্তি সব ব্যাপারেই দুর্দান্ত ছিলেন। উনি যে এত অল্প বয়সে মারা যাবেন সেটা কেউ ভাবতেই পারে নি। আর অসুখটাও নাকি আজকের দিনে কিছুই না। ফেলুদার তখন মাত্র ন বছর বয়স। মেজো জেঠিমা তার আগেই মারা গেছেন। সেই থেকে ফেলুদা আমাদের বাড়িতেই মানুষ।

(e) আদিম পৃথিবীতে পরিবেশ সম্পর্কে মানুষের বিস্ময় ও কৌতুহলের অন্ত ছিল না। প্রাণী-উদ্ভিদ-নদী-গিরি-সূর্য-দিন রাত্রি ও ঋতুচক্রের আবর্তন তাকে

নানা লোক কথা সৃষ্টিতে প্রণোদিত করে। প্রকৃতির বিচিত্র পরিবেশে প্রকাশের অন্তরালে শক্তির অস্তিত্ব অনুভব করে। সেই শক্তিকে সন্তুষ্ট রাখার সঙ্গে জীবনের শান্তি ও নিরাপত্তার অচ্ছেদ্য যোগ রচনা করে। এই উদ্দেশ্যে প্রার্থনা ও নিবেদন ক্রমে ধর্মের পথ সৃষ্টি করে দেয়। অন্য দিকে এই শক্তিকে বশীভূত করতে যেসব আচারের উদ্ভব হয় সেগুলি যাদুক্রিয়ায় পরিণত হয়। এইভাবে একটি শিক্ষাধারার আর্বিভাব হয়। তাতে জগৎ ও জীবনের স্বরূপ, উদ্ভব বিলয় সম্পর্কে আনুমানিক ধারনা দেওয়া হয়। এইসব ধারণার মিলিত সংহত রূপ পুরানে পরিণতি লাভ করে। তার পাশাপাশি কিছু মানুষ শক্তির নিয়ন্ত্রন করায়ত্ব করে স্বতন্ত্র প্রতিষ্ঠা কামনা করেছিল। তারা পরিবেশ, বাক্য, স্বাস্থ্য, ব্যক্তির ভাগ্য ও শুভাশুভ নিয়ে অভিজ্ঞ হয়ে উঠত।

6. নিম্নলিখিত का बांग्ला में अनुवाद कीजिए : 15

जब किसी तरह न रहा गया तो उसने झबरा को धीरे से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला दिया। कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद से चिपकाये हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था। झबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यही है; और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गन्ध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी

दीनता से आहत न था, जिसने आज उस इस दशा को पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिये थे और उसका एक -एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

सहसा झबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के दंडे झोकों को तुच्छ समझती थी। वह झपककर उठा और छतरी के बाहर आकर भूंकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुमकारकर बुलाया; पर वह उसके पास न आया। हार में चारों तरफ दौड़-दौड़कर भूंकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता तो तुरंत ही फिर दौड़ता। कर्तव्य उसके हृदय में आसमान की भाँति उछल रहा था।

अथवा

गजाधर बाबू खुश थे, बहुत खुश। पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर होकर जा रहे थे। इन वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रहकर काटा था। इन अकेले क्षणों में उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे। संसार की दृष्टि में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था। उन्होंने शहर में एक मकान बनवा लिया था, बड़े लड़के अमर और लड़की कान्ति की शादियाँ कर दी थीं, दो बच्चे ऊँची कक्षाओं में पढ़ रहे थे। गजाधर बाबू नौकरी के कारण प्राय: छोटे स्टेशनों पर रहे, और उनके बच्चे और पत्नी-शहर में, जिससे पढ़ाई में बाधा न हो। गजाधर बाबू स्वभाव से बहुत स्नेही व्यक्ति थे और स्नेह के आकांक्षी थी।

जब परिवार साथ था, ड्यूटी से लौटकर बच्चों से हँसते बोलते, पत्नी से कुछ मनोविनोद करते उन सबके चले जाने से उनके जीवन में गहन सूनापन भर उठा। खाली क्षणों में उनसे घर में टिका न जाता। कवि प्रकृति के होने पर भी, उन्हें पत्नी की स्नेहपूर्ण बातें याद रहती। दोपहर में, गरमी होने पर भी, दो बजे तक आग जलाए रहती और उनके स्टेशन से वापस आने पर गरम-गरम रोटियाँ सेंकती उनके खा चुकने और मना करने पर भी थोड़ा सा कुछ और थाली में परोस देती, और बड़े प्यार से आग्रह करती।